कक्षा 1 और 2 में रचनात्मक लेखन की गतिविधियाँ

भारती पंडित

शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ की गई सहज और अर्थपूर्ण बातचीत, जिसमें निजी अनुभव, कल्पनाशीलता, ब्योरे, संवेदना आदि का समुचित समावेश होता है, लिखना सीखने में बड़ी मददगार होती है। अगर कक्षा 1-2 में ही लेखन की विभिन्न गतिविधियाँ योजनाबद्ध और सहज ढंग से बातचीत की जाए तो आगे की कक्षाओं में लेखन के उत्तरोत्तर निखार की सम्भावना काफ़ी बढ़ सकती है। इस आलेख में भारती पंडित ने लेखन की इन विविध गतिविधियों के माध्यम से रचनात्मक लेखन की प्रक्रिया का अनुभवपरक ब्योरा प्रस्तुत किया है। सं.

शुरुआती लेखन की बात करें तो स्वयं बोली गई बात, अपने अनुभवों को शब्दों या वाक्यों में लिख पाना आदि से इसका सिलसिला शुरू होता है जो आगे जाकर रचनात्मक लेखन की ओर बढ़ता है। रचनात्मक लेखन भाषा के महत्त्वपूर्ण कौशलों में से एक है। कक्षा 1-2 में पढ़ना-लिखना सीख जाने के बाद अगली कक्षाओं में सामान्यतः रचनात्मक लेखन के अभ्यास शामिल किए जाते हैं जिससे बच्चे अपनी कल्पनाशीलता, अनुभव और सृजनात्मकता का उपयोग करते हुए कहानी, कविता, पहेलियाँ आदि लिखने की ओर बढ़ें और भाषा के एक महत्त्वपूर्ण कौशल को हासिल कर सकें। लेकिन शुरुआती कक्षाओं में भी यदि हम योजनाबद्ध तरीक़े से कुछ रोचक गतिविधियों के माध्यम से सार्थक लेखन पर काम करें तो ये बच्चे सरलता से रचनात्मक लेखन की तरफ़ बढ़ सकते हैं और आगे की कक्षाओं में यह कौशल और पैना हो सकता है।

कुछ समय पहले हमने शिक्षकों के साथ ‘भाषा की कक्षा में सृजनात्मकता’ शीर्षक से एक कोर्स संचालित किया था। कक्षा 3 से 8 तक के बच्चों के लिए उसमें काफ़ी गतिविधियों की सम्भावना थी जिन्हें शिक्षकों ने कक्षा में करके भी देखा।

कक्षा 1-2 को पढ़ा रही शिक्षिका ने कहा। “मैं इन गतिविधियों को अपनी कक्षा में भी करवाना चाहती हूँ, पर ये बच्चे अभी ठीक से पढ़-लिख नहीं पाते हैं, तो कैसे कर पाएँगे?”

उनके इस कथन ने मुझे भी सोचने पर मजबूर कर दिया। यह सही है कि जब तक बच्चे पढ़ना-लिखना ठीक से नहीं सीखते, कविता-कहानी, पहेली आदि लिखना उनके लिए मुश्किल है, पर क्या मौखिक गतिविधियों के रूप में कुछ ऐसा करवाया जा सकता है जो बच्चों को रचनात्मक लेखन की ओर प्रशस्त करने का मार्ग दिखाए? यूँ भी भाषा की बुनियाद मज़बूत हो, बच्चों का शब्दकोश समृद्ध हो और बच्चे रचना के स्वरूप को समझने लगें तो आगे जाकर उन्हें उसे लेखन में उतारना अधिक सहज हो जाएगा।

“आप कक्षा में कौन-कौन सी गतिविधियाँ करवाती हैं?” मेरा सवाल था।

“मैं अभी तो बच्चों को पढ़ना-लिखना ही सिखा रही हूँ। कविता का चार्ट पढ़ना, उसमें शब्द और वर्ण पहचानना, कविता की पट्टी जमाना, चित्र बनाना आदि काम बच्चे ही करते हैं।” शिक्षिका ने जवाब दिया।

"ठीक है, तो हम इन्हीं गतिविधियों के साथ कुछ और चरण जोड़ेंगे जो बच्चों को रचनात्मकता की तरफ़ ले जाने में मदद करेंगे।"

हम दोनों ने मिलकर कुछ गतिविधियों को सूचीबद्ध किया और उनके लिए काम आने वाली सामग्री, उनकी प्रक्रिया, समय सीमा आदि पर विस्तृत बात की। ये गतिविधियाँ हमने सप्ताह में तीन दिन भोजनावकाश के बाद के कालखण्ड में करवाने की योजना बनाई।

उन्हीं गतिविधियों को नीचे विस्तार से दिया जा रहा है :

कविता पर काम करना

इस कक्षा में 'अरी गिलहरी', 'पेड़', 'लाल टमाटर' आदि कविताओं पर काम हो चुका था और बच्चों को ये कविताएँ ज़ुबानी याद थीं साथ ही कुछ शब्दों की पहचान भी थी। वे अनुमान से कविता पढ़ पाते थे। अगली योजना 'वह देखो वह आता चूहा' पर काम करने की थी। कविता का चार्ट लगा हुआ था, उसमें से देखकर कविता पढ़ने की गतिविधि थी। कविता का अभिनय, उसके शब्दों की ओर ध्यान दिलाना, पंक्तियों का क्रम पहचानना, एक जैसे शब्दों की पहचान, आदि पर काम होने के बाद बच्चों से कहा गया कि आपको इस कविता में सबसे अच्छे पाँच शब्द कौन-से लगे, उन्हें कॉपी में लिखो और पढ़कर दिखाओ। सब बच्चे ठीक से लिखना नहीं जानते थे मगर उन्होंने जो टेढ़ा-मेढ़ा लिखा था, उसे पढ़ पा रहे थे। इसके बाद हमने उनका ध्यान आता चूहा, मुस्कराता चूहा, खाता चूहा आदि की ओर दिलाया और पूछा, आता, खाता, मुस्कराता जैसे और कौन-से शब्द हो सकते हैं? बच्चों ने थोड़ी देर सोचकर पानी पीता, पुस्तक पढ़ता, गाना गाता, चिल्लाता, पतंग उड़ाता जैसे शब्द बोलना शुरू किया। हमारा निहितार्थ सिद्ध हो गया था। मैंने कहा, चलो इस कविता को आगे बढ़ाते हैं– वह देखो वह आता चूहा... अब इसके आगे क्या-क्या जोड़ सकते हैं? जिस बच्चे ने जो शब्द बताया था, उसे वे कविता में पिरोकर बताने लगे– पानी पीता चूहा, पुस्तक पढ़ता चूहा, पतंग उड़ाता चूहा, गाना गाता चूहा, ऊधम मचाता चूहा, ज़ोर से चिल्लाता चूहा, कपड़े काटता चूहा...

स्पष्ट था कि बच्चों को कविता आगे बढ़ाने का तरीक़ा समझ में आ रहा था। शिक्षिका ने बच्चों द्वारा बोली जा रही सारी पंक्तियाँ एक चार्ट पर लिख दीं। अब इस तरह बनी हुई नई कविता को सबने मिलकर पढ़ा। ये देख, ये मेरी लाइन है, कहते हुए बच्चे बड़े ख़ुश हो रहे थे।

जब हमें यह समझ में आ गया कि बच्चे अपने मन से कुछ पंक्तियाँ सोच सकते हैं तो अब इस गतिविधि को थोड़ा अलग से किया गया। इसमें हमने बोर्ड पर एक पंक्ति लिखी–

हवा चली सरसरसर

अब शिक्षिका ने बच्चों से बात की कि हवा के चलने से सरसर की आवाज़ होती है, और किस-किस की आवाज़ आपको ध्यान है?

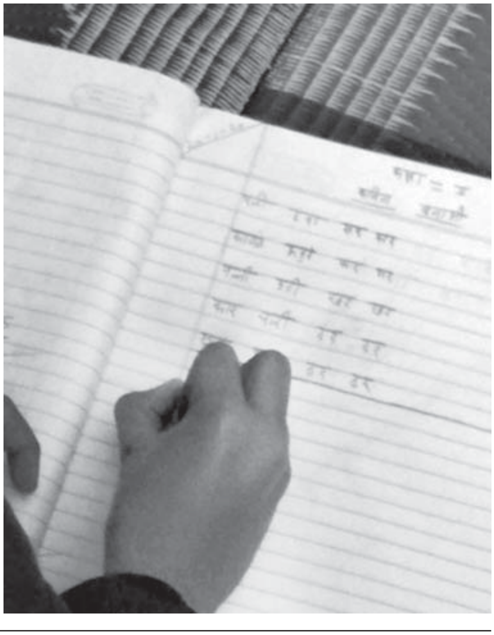

बच्चे थोड़ी देर सोचते रहे और फिर एक आवाज़ आई–चिड़िया उड़ी फरफरफर

दूसरी आवाज़ आई– बादल बोले गड़गड़गड़, पानी टपका टपटपटप

तीसरा बच्चा बोला– हमारी छत टपकी टपटपटप

पहली कक्षा की एक बच्ची बोली– नाव चली टपटपटप

उसके पास बैठा बच्चा बोला– नाव की आवाज़ सुनी है क्या? टपटप तो पानी का टपका लगता है। वह बच्ची हँसने लगी। शिक्षिका ने बताया कि नाव चलने की आवाज़ को छपछपछप कह सकते हैं।

पर मैडम, काग़ज़ की नाव की आवाज़ तो होती ही नहीं, दूसरी कक्षा के एक बच्चे का प्रश्न था। हम दोनों एक दूसरे की तरफ़ देख मुस्कुरा दिए, मन में सन्तोष था कि बच्चे कविता रचने का आरम्भिक तरीक़ा और सन्दर्भ दोनों समझ पा रहे हैं। हाँ, जब असली नाव पानी पर चलती है, तो ऐसी आवाज़ होती है। शिक्षिका ने उत्तर दिया।

थोड़ी ही देर में हमारे पास दस-बारह पंक्तियाँ आ चुकी थीं और बच्चों ने छोटी-सी कविता बना ली थी।

एक और बात उल्लेखनीय थी कि इस बीच कुछ बच्चों ने कार चली, स्कूटर चला, घोड़ा चला, आदि की भी बात की। हम कुछ कहते इतने में ही दूसरी कक्षा की एक बच्ची ने कहा, अरे! यहाँ तो बारिश के मौसम की बात कर रहे हैं तो उसकी आवाज़ें बताओ न... हमें आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता हुई कि बच्चे मूल विषय से पंक्तियों के जुड़ाव को समझ रहे हैं। इसपर शिक्षिका ने बात की और वाहनों की आवाज़ों को लेकर एक अलग कविता बनाई गई। इन कविताओं को पढ़ा गया और बच्चों ने अपनी कॉपी में लिखा। अब इन कविताओं को चार्ट पर लगाया जाना था ताकि बच्चे उन्हें लगातार देख सकें।

इस गतिविधि में बच्चों में कविता के विषय, संरचना, उसे आगे बढ़ाने आदि की थोड़ी समझ विकसित होती नज़र आ रही थी।

कहानी पर काम करना

झोला पुस्तकालय की पुस्तकों की कहानियों को लेकर भी इस कक्षा में काम होता था। कहानियों को हाव-भाव से पढ़कर सुनाना और उनपर बात करना कक्षा में होता था। कहानी में आए कुछ शब्दों को पढ़ने का भी कार्य किया जाता था। इन सबके साथ हमने कहानी पर चित्र बनाना, कहानी को अपने शब्दों में लिखना और कहानी का अभिनय करवाना, आदि गतिविधियाँ चुनीं। इन गतिविधियों को करवाते समय एक और विचार आया कि क्यों न दूसरी कक्षा के बच्चों से बातचीत करके ही किसी कहानी को गढ़ा जाए। अब तक बच्चे कहानी को अपने शब्दों में सुना पा रहे थे, उसका अभिनय भी कर पा रहे थे। हमने इसकी शुरुआत पहले चित्र कहानी से करने का विचार किया। बच्चों को एक चित्र दिखाया और उस चित्र से कोई कहानी ध्यान में आती है क्या, इसपर बात की। पर यह प्रयास सफल नहीं हुआ, चूँकि बच्चे चित्र का वर्णन ही करते जा रहे थे। हमने उसे कहानी के रूप में बदलने की भी कोशिश की मगर बच्चों को उससे अरुचि होने लगी।

अगले दिन हमने कुछ अलग-अलग चित्र बच्चों के सामने रखे– एक तितली जो बग़ीचे में थी, दूसरे चित्र में तितली फूल पर थी, तीसरे चित्र में चिड़िया उसी पेड़ पर थी, चौथे चित्र में तितली और चिड़िया कुछ बात कर रही थीं। अब जब बच्चों को एक चित्र देखकर कहानी का पहला वाक्य बोलने को कहा तो बात बन गई। एक तितली थी जो रोज़ बग़ीचे में जाती थी। पहला वाक्य दूसरी कक्षा के बच्चे ने बताया। क्या इस तितली को कोई नाम दे सकते हैं?

तितली के नाम के बारे में बात हुई और नाम आया रंगीली... अब वाक्य को मैंने दोहराया– रंगीली तितली रोज़ एक बग़ीचे में घूमने जाया

करती थी। अब दूसरे चित्र में? वह हर फूल पर जाती थी, फूलों से उसकी दोस्ती थी। थोड़ी बातचीत के बाद अगला वाक्य बना। इस तरह से चित्रों की सहायता से पाँच-छह पंक्तियों की एक कहानी बन गई।

कोर्स में हमने बिग बुक की बात की थी। शिक्षिका ने इस कहानी की पंक्तियों को चार्ट मोड़कर उसके पन्नों पर स्केच पेन से लिखा। बच्चों से अपनी-अपनी कॉपी पर इन पंक्तियों को लिखने और चित्र बनाने को कहा गया। फिर कुछ बच्चों ने इन चित्रों को चार्ट पर भी बनाया और कुछ ने चित्रों में रंग भरा। ऐसे बच्चों ने ख़ुद एक कहानी और उस कहानी की किताब भी बनाई।

पहेली बनाओ

इन गतिविधियों को करते हुए पहेली बनाने पर काम करने का विचार भी आया। बच्चे पहेली बूझ तो लेते हैं मगर बना पाएँगे कि नहीं, पता नहीं... शिक्षिका थोड़ी दुविधा में थीं। कोशिश करके देखते हैं, मैंने कहा। हमने दो तरह की पहेलियाँ उनके सामने रखीं :

वाक्य की पहेली, जैसे– मेरा रंग सफ़ेद है, मैं लिखने के काम आता हूँ...

गीत पहेली, जैसे– ऊपर जाती-नीचे आती, डोर बाँधकर मैं लहराती

आसमान में हूँ लहराती, बच्चों के मन को हूँ भाती

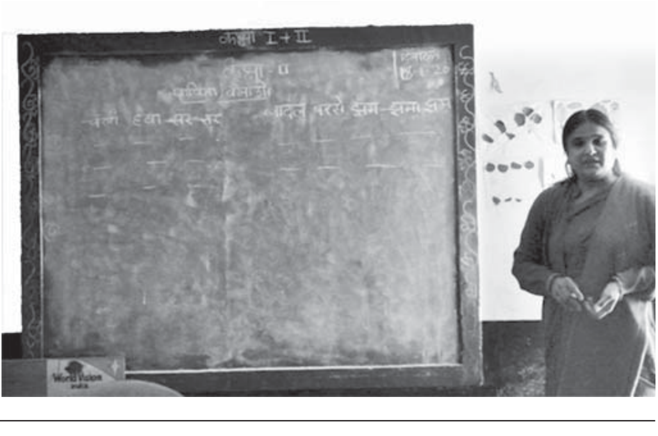

बच्चों को पहेलियाँ बूझने में बहुत मज़ा आया। अब हमने उनसे कहा, अपनी किसी वस्तु के बारे में वाक्य पहेली बना सकते हो? हमने कुछ उदाहरण दिए, जैसे– पंखा, बस्ता, बोर्ड, कॉपी, टिफ़िन के बारे में ऐसे वाक्य बनाओ...

बच्चों ने इसे जल्दी समझ लिया और कई वाक्य आए :

मैं बिजली से चलता हूँ, हवा देता हूँ, बताओ कौन हूँ?

मैं होमवर्क लिखने के काम आती हूँ, बताओ मैं कौन हूँ?

मेरा रंग लाल, पीला, काला, नीला होता है, मुझे कन्धे पर लटकाते हैं, किताबें रखते हैं, बताओ मैं कौन हूँ?

हालाँकि गीत पहेली को लेकर समस्या बनी रही, पर हमें विश्वास था कि लगातार इस तरह के उदाहरण देकर काम करवाते रहने से बच्चे जल्दी ही गीत पहेलियाँ भी बनाने लगेंगे।

वस्तुओं से बातचीत

एक और मज़ेदार गतिविधि इस कक्षा में कराई गई। एक स्कूल में मैंने कक्षा 5 के बच्चों को बोतल, चोटी, दीवार, मेज़, कुत्ता, आदि को पत्र लिखने के लिए कहा था और बच्चों को उसमें ख़ूब मज़ा आया था। मेरे मन में आया कि इस कक्षा में भी यह गतिविधि मौखिक रूप से करवाई जा सकती है, पत्र भले नहीं मगर सामान्य बातचीत तो हो ही सकती है। मैंने यह विचार मैडम से साझा किया। हमने बच्चों से कहा कि हम लोग अपने दोस्तों से, घर के लोगों से, पड़ोसी आदि सबसे बात करते हैं। पर यदि आपको अपने बस्ते से बात करनी हो, इस पानी की बोतल से बात करनी हो, कुत्ते से बात करनी हो, अपनी चोटी से बात करनी हो तो क्या बात

करोगे? बच्चे पहले तो चुप रह गए। समझ नहीं पाए कि क्या कहा जा रहा है। फिर शिक्षिका ने अपनी बोतल उठाई और उसे कहा, बोतल, तुम्हारा रंग मुझे बहुत पसन्द है। तुम मेरे बहुत काम भी आती हो पर एक बात बताओ, दिनभर पानी भरे-भरे थकती नहीं? भीगती रहती हो तो जुकाम नहीं होता?

बच्चे पहले तो ख़ूब हँसे, फिर एक-दो बच्चों ने मैडम के ही वाक्यों को दोहराना शुरू किया। हमने अब उन्हें बोतल को छोड़कर किसी और वस्तु से बात करने को कहा। एक बच्चे ने बस्ते से बात की– तुम इतनी सारी किताबें उठाकर थक जाते हो न! लाओ तुम्हारे पाँव दबा दूँ। अरे पर बस्ते के पाँव कहाँ हैं? बाक़ी बच्चे हँस पड़े। यह गतिविधि हमने कई दिनों तक जारी रखी और बच्चों को अलग-अलग वस्तुओं से बातचीत करने का मौक़ा दिया, मौखिक रूप से अपनी बात गढ़ने और नए शब्दों का प्रयोग करने का भी अवसर उन्हें मिला, नए शब्द या वाक्य हम भी सुझाते रहे। हालाँकि इसे आगे लेखन तक नहीं ले जाया जा सका।

इन गतिविधियों को करवाते समय एक मुख्य बात यह समझ में आई कि बच्चों को यदि मज़ा आने लगे, क्या करना है यह समझ में आने लगे, तो उनके लिए हर गतिविधि आसान हो जाती है। यह सम्मिलित कक्षा थी जिसमें कक्षा 1 और 2 के बच्चे शामिल थे। निश्चित ही कक्षा 1 के बच्चे शुरुआत में गतिविधियों में उतना हिस्सा नहीं ले पाए मगर कक्षा में क्या हो रहा है, उसे बड़े ध्यान से समझने की कोशिश में रहते थे। बाद में अपनी समझ के मुताबिक़ गतिविधियों में हिस्सा भी लेने लगे थे। हालाँकि उनके जवाब एकदम आरम्भिक स्तर के हुआ करते थे मगर भाषा पर पकड़ बनाने की दृष्टि से यह सहभागिता भी बड़ी महत्त्वपूर्ण थी। इसके अलावा कक्षा 2 के बच्चे अकसर कक्षा 1 के बच्चों को अपने साथ शामिल कर लिया करते थे जिससे साथ मिलकर सीखने का क्रम भी आगे बढ़ता रहता था।

लिखित भाषा पर पकड़ बनाने के लिए मौखिक स्तर पर काम किया जाना बहुत आवश्यक होता है। बच्चे जो भी लिखना चाहते हैं, उस संरचना की उन्हें समझ हो जाए तो विचारों को क्रमबद्ध करना उनके लिए आसान हो जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस कक्षा में ये गतिविधियाँ की गईं। हालाँकि कोविड महामारी के चलते स्कूल बन्द हो गए अतः इसके बाद इन बच्चों के साथ काम न हो सका। पर उम्मीद यही है कि ये अनुभव उन्हें अगली कक्षा में भी अवश्य काम आएँगे।

भारती पंडित दो दशक तक स्कूली शिक्षा में अध्यापन करती रही हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भोपाल (मध्यप्रदेश) में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : bharti.pandit@azimpremjifoundation.org